गांधीजी एवं टॉलस्टॉय

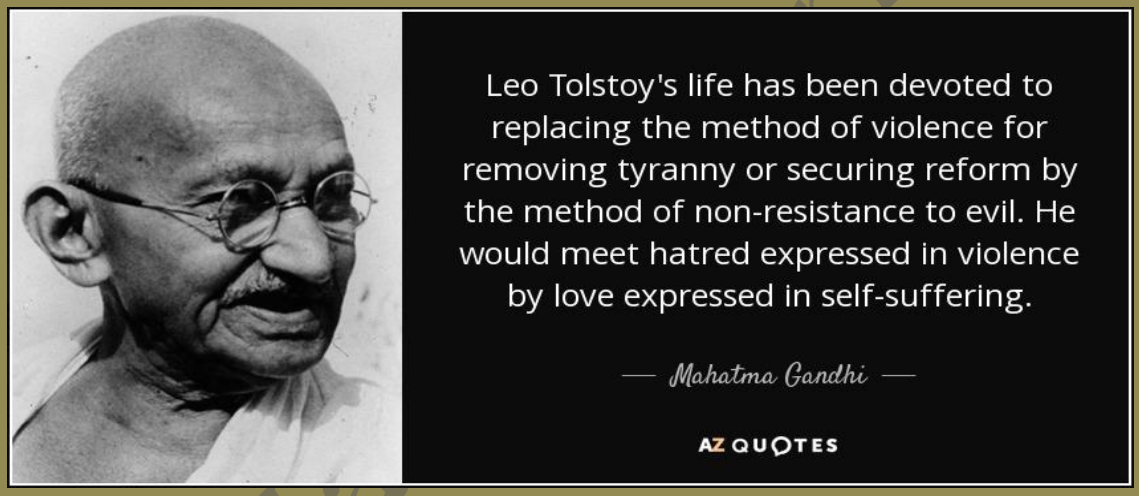

Dr. Manish Shrimali

Assistant Professor

Mohan Lal Sukhadia University

Udaipur

manishmlsu2018@gmail.com

Dr. Manish Shrimali

गांधीजी एवं टॉलस्टॉय

मोहनदास करमचंद गांधी नामक एक काठियावाड़ी वकील जिसे समस्त विश्व महात्मा गांधी के नाम से जानती है। आणविक शस्त्रों से सुसज्जित इस विश्व को महात्मा गांधी ने ही निःशस्त्रीकरण से इतर संघर्ष एवं प्रतिरोध की वैकल्पिक तकनीक प्रदान की जो प्रेम एवं अहिंसा पर आधारित है। महात्मा गांधी के प्रतिरोध तकनीक की सफलता को देखते हुए ही बाद मे कई महापुरूषों ने इसे अपने जीवन में उतारा तथा दुनिया को यह बताया कि हम त्याग, समर्पण एवं प्रेम के द्वारा अपने विरोधियों का हृदय परिवर्तित कर संघर्ष का समाधान किया जा सकता है। जब यह प्रश्न आता है कि गांधी जी की यह प्रेम एवं अहिंसा आधारित तकनीक का ईजाद कैसे हुआ तब निश्चय ही गांधीजी पर उनकी माता, वैष्णव एवं जैन धर्म का प्रभाव तो था किंतु जब वह हिंसा एवं अहिंसा के संशयवाद से घिरे हुए थे तब उनके प्रारंभिक विचारों को एक मूर्त रूप देने एवं मार्गदर्शन करने में उनके समकालीन सदी के महान् विचारक लियो टॉलस्टॉय की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। दोनों ही अहिंसा के पुजारियों के मध्य लंबे समय तक पत्रो के माध्यम से संवाद होता रहा था।

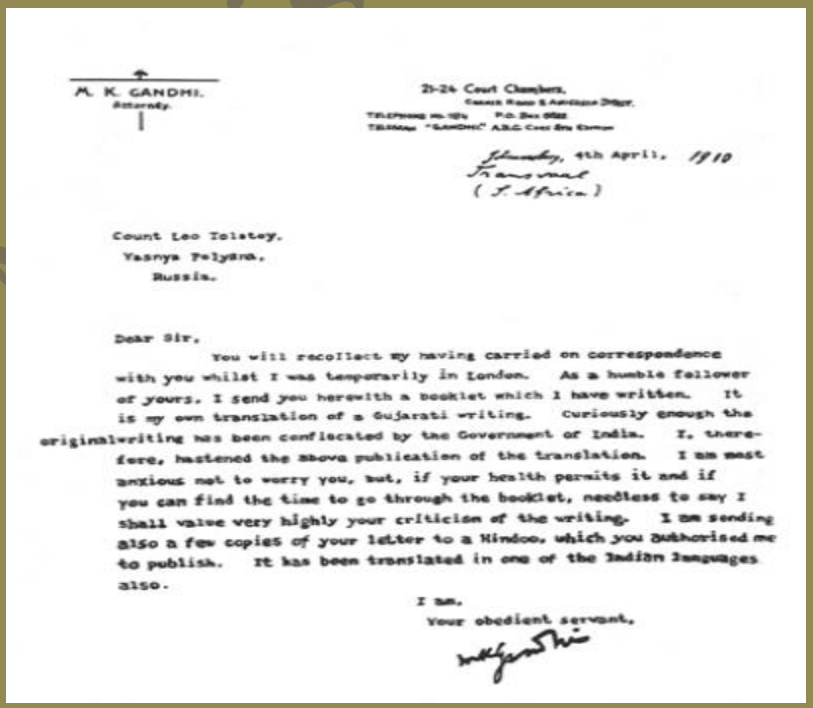

M. K. GANDHI.
Attorney.

21-24 Court Chambers,

Thursday, 4th April, 1910
Transvaal
(S. Africa)

Count Leo Tolstoy,
Yasnya Polyana,
Russia.

Dear Sir,

You will recollect my having carried on correspondence with you whilst I was temporarily in London. As a humble follower of yours, I send you herewith a booklet which I have written. It is my own translation of a Gujarati writing. Curiously enough the originalwriting has been confiscated by the Government of India. I, therefore, hastened the above publication of the translation. I am most anxious not to worry you, but, if your health permits it and if you can find the time to go through the booklet, needless to say I shall valve very highly your criticism of the writing. I am sending also a few copies of your letter to a Hindoo, which you authorised me to publish. It has been translated in one of the Indian languages also.

I am,
Your obedient servant,

Original Letter : Gandhi write to Leo Tolstoy

टॉलस्टॉय का दर्शन

टॉलस्टॉय का दर्शन ईसाई अराजकतावाद के नाम से जाना जाता है यह आधुनिक युग की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान में सरमन ऑफ द माउंट की शिक्षाओं को व्यावहारिक अनुप्रयोग है। टॉलस्टॉय के अनुसार ईसा मसीह की शिक्षाओं के द्वारा मानवीय समस्याओं की उपयुक्त समाधान प्रेम है। टॉलस्टॉय अनुसार अ-प्रतिरोध और असहयोग के सिद्धांतों का आधार है के बीच व्यस्त हुई है क्योंकि यह ईसाई होने का दावा तो करती है किंतु इसके विपरीत वह रक्षा हेतु शक्ति के साधनों के प्रयोग की इजाजत भी देती है यह प्रेम के नियम के विपरीत है और इसके लिए अखबार की भी इजाजत नहीं वहां कोई कानून नहीं है लेकिन वहां सबसे ताकतवर मौजूद है।

टॉलस्टॉय राज्य और उसकी मशीनरी, कानून, न्यायालयों, पुलिस, सेना निजी संपत्ति तथा पूंजीवादी और यहां तक की पाठशाला की निंदा करते हैं क्योंकि यह सभी प्रेम के नियम की भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं। शक्ति या बल के प्रयोग का, करो की अदायगी का तथा अनिवार्य सैन्य सेवा का विरोध किया। वह इस बात का समर्थन करते हैं कि संगठित समाज औपचारिक सहयोग द्वारा बदला जाना चाहिए, हालांकि उसे आदर्श अहिंसक समाज का विस्तृत विवरण देते हुए कोई परेशानी नहीं होती है। इसे असहयोग को उत्पन्न करने की पद्धति के संदर्भ में टॉलस्टॉय हिंसा के विरोध और प्रेम, अ-प्रतिरोध तथा और असहयोग के पक्ष में है। वहां व्यक्ति पर बहुत अधिक जोर देता है। टॉलस्टॉय ने गरीबी एवं अमीरी के बीच की खाई को कम करने हेतु अमीरों को भूमि दान करने का उपदेश एवं आग्रह किया तथा शारीरिक श्रम की गरिमा का उपदेश दिया। गांधीजी भी टॉलस्टॉय कि इस बात के बड़े प्रशंसक हैं एवं प्रेम को उनके सिद्धांत का ऋणी भी मानते हैं। गांधी जी ने लिखा था कि स्वर्गीय राजा हरिश्चंद्र के बाद टॉलस्टॉय उन 3 आधुनिक लोगों में शामिल किए जा सकते हैं जिसने मेरे जीवन पर अत्यधिक आध्यात्मिक प्रभाव डाला इन दो व्यक्तियों के अलावा तीसरा व्यक्ति जॉन रस्किन है। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में एक यात्रा के दौरान टॉलस्टॉय की प्रसिद्ध रचना किंगडम ऑफ गॉड विथिन यू का अध्ययन किया। इस पुस्तक ने गांधी जी के अहिंसा एवं प्रेम के सिद्धांत में विश्वास को मजबूत किया यह वह दौर था जब वे

Dr Manish Shrimali

हिंसा में विश्वास करते थे और संत सेवा के संकट से गुजर रहे थे वह कहते हैं कि उसके अध्ययन ने मुझे संशयवादी होने से रोका तथा मुझे अहिंसा के प्रति पक्का विश्वासी बनाया।

गांधीजी एवं टॉलस्टॉय के बीच समानता

अहिंसा के इन दो महान आधुनिक प्रतिपादको के सिद्धांतों में निम्न समानताएं थी

- दोनों ही आधुनिक इस मशीनरी सभ्यता के विरोधी वह इसे और नैतिकता पर आधारित तथा बल और शोषण का एक माध्यम मानते थे।
- दोनों ही बुराई से लड़ने के हिंसक तरीके के विरोधी थे। अतः इस हिंसक तरीकों का प्रेम एवं अहिंसा से सामना करने हेतु उनका मानना था की इसके लिए सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं को मजबूत बनाना होगा इसके लिए आंतरिक आत्मक पूर्णता तथा सामाजिक उत्थान इस दिशा में पहला प्रयास होगा। दोनों ही अपने आप को साधनों की शुद्धता से जोड़ते हैं ना कि आदर्श समाज के विस्तृत विवरण से।
- दोनों में जो एक महत्वपूर्ण समानता थी वह इस आधुनिक सभ्यता के विकल्प के रूप में पुनः एक आदर्श ग्रामीण समाज जहां पर सभी समान हो और सभी श्रम आधारित कार्य के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन करें। टॉलस्टॉय और गांधी जी ने व्यक्ति के नैतिक उत्थान के लिए अनिवार्य तत्व के रूप में ब्रह्मचर्य और श्रम की रोटी तथा अति सादा जीवन जीने के लिए सन्यासी नैतिकता एवं उपदेश की वकालत की।

गांधीजी एवं टॉलस्टॉय के बीच असमानता

गांधीजी जीवन में टॉलस्टॉय से ज्यादा व्यवहारिक थे। गांधी मूलतः गैर महत्वपूर्ण स्थितियों में समझौता वादी रहे हैं। वे सोचते हैं कि समझौते की आवश्यकता सत्य की सापेक्ष प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न हुई है। हालांकि गांधीजी टॉलस्टॉय से अलग अपने सिद्धांतों के प्रति बहुत सूक्ष्म धर्म शीलता हेतु हमेशा तैयार रहते हैं। उसके कार्यों को स्वीकारना बदलते विश्व की मांग है। उनका मानना था कि अनुभूति करण का यह आदर्श असंभव है और जहां तक संभव हो, हमें इसके लिए कोशिश अवश्य करनी चाहिए।

Dr. Manish Shrimali

गांधी जी की अहिंसा की धारणा टॉलस्टॉय से हल्की सी भिन्न है। उत्तरवर्ती के लिए अहिंसा का अर्थ है- बल या शक्ति के सभी रूपों को नकारना। पूर्ववर्ती ने अहिंसा के उद्देश्य पर जोर देते हुए अहिंसा को किसी भी जीवित प्राणी के प्रति चोट या दुख को नकारना और स्वार्थ से बचना। हालांकि कुछ निश्चित परिस्थितियों में कृत्य करना हिंसा नहीं मानी जा सकती है। जीवन में कुछ मात्रा में हिंसा तो सम्मिलित रहती है, टॉलस्टॉय इसको नजरअंदाज कर जाते हैं। दूसरी तरफ गांधी जीवन में उत्सुकता पूर्ण सहभागीता और चुनाव के कर्म के गीता के आदर्श का अनुसरण करते हैं। इसी मूलभूत विभेद के कारण गांधी की अहिंसक तकनीक टॉलस्टॉय से श्रेष्ठ है और सामाजिक बुराइयां जिनको टॉलस्टॉय ने बुद्धिमत्ता पूर्वक प्रकट किया और उतने ही आवक पूर्णता से नकार दिया गांधी ने उसको दूर करने का रास्ता खोला।

Dr. Manish Shrimali